मधुबन के चार धामों की रूहानी यात्रा

1. शान्ति स्तम्भ ' महाधाम ' :– शान्ति स्तम्भ के पास जाते ही शक्तिशाली संकल्प करें कि मैं शान्ति के सागर सर्वशक्तिवान पिता की सन्तान मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ........, मैं प्रकाशमय काया में शान्ति स्तम्भ के पास बैठा हूँ........, अव्यक्त बापदादा के वरदानी हाथ मेरे सिर पर हैं......., बाबा के वरदानी हाथों में से सर्व शक्तियों की असंख्य रंगबिरंगी किरणें निकलकर मुझ पर पड़ रही हैं........, मैं आत्मा सर्व शक्तियों से संपन्न बन रही हूँ ...., मेरे से चारों ओर पवित्रता का प्रकाश फैल रहा है.........., मैं शक्तिशाली आत्मा बापदादा की छत्रछाया में हूँ............, मुझे आत्मा से निरन्तर वायुमण्डल तथा सर्व आत्माओं को शक्तिशाली स्थिति बनाने के बायब्रेशन फैल रहे हैं..............।

2. बापदादा का कमरा ' स्नेहधाम ' :– बाबा के कमरे में प्रवेश करते ही अनुभव करें कि मैं अव्यक्त वतन में प्रवेश कर रहा हूँ............, सामने ट्रांसलाईट को देखते हुए महसूस करें कि सचमुच बाबा अव्यक्त वतन से नीचे उतरकर मेरे सम्मुख बैठे हैं.........., मुझे आप समान बनाने के लिए बाबा अपनी नजरों से निहाल कर रहे हैं.........., बाप समान बनने की शिक्षाओं को स्मृति में लाते हुए बाप समान समर्थ स्वरूप की अनुभूति करें कि जिस प्रकार ब्रह्मा बाबा सदैव लाईट हाउस, माईट हाउस बन कर रहे उसी प्रकार बाबा मुझे भी आप समान बनाने के लिए नयनों से कुछ कह रहे हैं ....., बच्चे सदा बाप समान निराकारी, निरंहकारी, निर्विकारी भव, बाप समान लाईट हाउस माईट हाउस भव, सदा स्नेह, सहयोग की मूर्त भव............, आदि आदि विभिन्न वरदानों के स्मृति स्वरूप बन समर्थ स्थिति का अनुभव करें।,

3. बाबा की झोपड़ी ' स्नेहमिलन का धाम ' :– बाबा की झोपड़ी में रूहरूहान – बाबा की झोपड़ी में प्रवेश करते ही इस अनुभव में खो जाएं कि बाबा कितने लंबे समय से मेरी प्रतिक्षा कर रहे हैं ...., बाबा मुझे बाहें पसारे बुला रहे हैं कि आओ मेरे प्यारे बच्चे, मीठे बच्चे, सिकिलधे बच्चे, मेरे लाल .... मैं तुम्हारी कब से राह देख रहा था। जन्म जन्म तुमने मुझे कहां कहां ढूंढा......, कितनी भक्ति की, पाठ पूजा किया, जप तप किया, कितने कर्मकाण्ड किए, कितने कष्ट सहे, दुःख सहन किए........। अब मैं तुम्हारी सारी थक मिटाने आया हूँ। अब तुम्हारे दुःख के दिन पूरे हुए..., मैं तुम्हें ज्ञान, पवित्रता, सुख, शान्ति, आनन्द, प्रेम और शक्ति आदि सर्व गुणों से संपन्न बनाकर अपने घर ले जाने आया हूँ...........। अब आप बाबा से बात करें .... अहो मेरे मीठे बाबा, जान से भी प्यारे बाबा, सचमुच आपने मेरी सारी थकान मिटा दी, मैं कितना हल्का बन गया हँ, मैं कहां कहां भटक रहा था..........। बाबा अब आप मुझे मिल गए मेरी सारी चिन्ताएं दूर हो गई............। इस प्रकार बाबा से सर्व संबंधों की रूहरूहान करते हुए उनका अनुभव करें और बाबा के प्यार में खो जाएं, लवलीन हो जाएं, अहो बाबा आपके प्यार के मिलन में कितना सुख समाया है.........। बाबा मैं आपकी श्रीमत पर पूरा पूरा चल पावन बन सबको आपका संदेश दूंगा, सबको पावन बनाऊंगा......।

4. हिस्ट्री हाल ' समर्थ स्मृति धाम ' :– व्यर्थ से मुक्त होने के लिए बाबा के हिस्ट्री हॉल में पहुंचे। साकार बाबा द्वारा किए यज्ञ कर्म को आदि से देखना आरम्भ करें कि जैसे साकार बाबा को निराकार शिव बाबा का साक्षात्कार हुआ, यज्ञ की ओम मण्डली के रूप में सिन्ध में स्थापना हुई, साकार ब्रह्मा बाबा द्वारा श्रीकृष्ण का साक्षात्कार, अनेकों भाई-बहनों का14 वर्ष की गहन तपस्या का समय, कई तरह के दिव्य एवं अलौकिक अनुभव, सिन्ध से माउण्ट आबू में स्नानातंरण और बेहद सेवा के लिए सब में उमंग उत्साह भरना, सबको सेवाओं पर भेजना, इतने बड़े यज्ञ की जिम्मेदारी सम्भालते हुए भी सदा बाबा हल्के रहे, बाबा का त्याग, बाबा की तपस्या, हिस्ट्री हॉल में बापदादा द्वारा अपने बच्चों से मिलना, शिक्षाओं से श्रृंगारना............. आदि आदि यज्ञ के इतिहास को स्मृति में लाने से व्यर्थ समाप्त हो समर्थ स्थिति बन जाएगी और पुरूषार्थ में तीव्रता आएगी।